लक्ष्मी नारायण दुबे महाविद्यालय, मोतीहारी,
पूर्वी चम्पारण, बिहार

भक्तिकाल : परिचय, नामकरण एवं स्वरूप

डॉ. सन्तोष विश्नोई, सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग

2- भक्तिकाल
(1350 ई. से 1650 ई. तक)

→ हिन्दी साहित्य इतिहास के विकास का दूसरा चरण भी भक्तिकाल के नाम से जाना जाता है।

→ भारतीय राजनैतिक दृष्टि से 'मुहम्मद बिन तुगलक' के शासन काल से भक्तिकाल का उदय माना जाता है।

→ इस भक्तिकाल में आध्यात्मिकता एवं ज्ञानचेतना से युक्त उच्च कोटि का काव्य हिन्दी साहित्य में लिखा गया था जिसके कारण जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने भक्तिकाल को 'हिन्दी साहित्य का स्वर्णकाल' कहकर पुकारा है।

→ शाश्वत मानव मूल्यों की स्थापना करना भक्ति साहित्य के लेखन का प्रमुख उद्देश्य माना जाता है।

→ भक्ति शब्द का सर्वप्रथम ~~प्रयोग~~ उल्लेख 'श्वेताश्वेतरोपनिषद' नामक ग्रंथ में प्राप्त होता है।

→ भक्ति शब्द मूलतः 'भज' धातु में 'क्तिन' (ति) प्रत्यय के जोड़ने से बना है जिसका शाब्दिक अर्थ होता है 'अपने आराध्य/उपास्य ईश्वर के कार्यों में भाग लेना' ही भक्ति कहलाती है।

→ नामकरण →
आदिकाल की तरह भक्तिकाल को भी विविध विद्वानों के

दवारा निम्नानुसार अलग-अलग नामो से पुकारा गया है यथा -

क्र.सं.	विद्वान का नाम	नामकरण
1.	जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन	- 15 वीं शताब्दी का धार्मिक पुनर्जागरण (हिन्दी साहित्य का स्वर्ण काल)
2.	मिश्रबन्धु	- माध्यमिक काल
3.	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	- पूर्वमध्य काल या भक्तिकाल
4.	बाबू श्याम सुन्दर दास	- भक्ति युग
5.	रामविलास शर्मा	- पुनर्जागरण काल
6.	राम प्रसाद मिश्र	- पुनरुत्थान काल
7.	डॉ. पृथ्वीनाथ कमल 'कुलश्रेष्ठ'	- कलात्मक उत्कर्ष काल

→ भक्ति कालीन साहित्य के उदय के कारण →

1. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार - "हिन्दू जनता पर मुस्लिम शासकों की पराजय या इस्लाम का प्रभाव भी कहा जा सकता है।"
कथन :- "एक हताश हिन्दू जनता की मनोवृत्ति का परिणाम भक्ति है।"

2. आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के अनुसार → हिन्दी जनता की स्वाभाविक आस्था।
कथन :- "मैं इस्लाम के महत्व को भूल नहीं रहा हूँ फिर भी यह जोर देकर कहना चाहता हूँ कि यदि भारत में इस्लाम न आया होता तो भी भक्ति का स्वरूप वैसा ही होता जैसा आज है।

3. जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन के अनुसार → ईसायत की देन।

नोट:— इन्होंने भक्तिकालीन साहित्य को अचानक बिजली की चमक के समान फैल जाने वाला साहित्य भी कहकर पुकारा है।

4. डॉ. ताराचन्द → अरबों की देन

→ भारत में भक्ति आन्दोलन का स्वरूप—

"उत्पन्ना द्रविड़े चाहं वृद्धिं कर्णाटके गता।
क्वचिद क्वचिद महाराष्ट्रे गुजरे जीर्णतां गता॥"

→ भारत में भक्ति आंदोलन का उदय सर्वप्रथम दक्षिण भारत से शुरू हुआ माना जाता है एवं धीरे-धीरे यह सम्पूर्ण भारतवर्ष में फैल गया था

→ भारत के विभिन्न भागों में भक्ति आंदोलन को

फैलाने में निम्नलिखित विद्वानो / संस्थाओं का महत्वपूर्ण योगदान माना जाता है यथा —

क्र.स.	क्षेत्र का नाम	विस्तार कर्ता
1.	उत्तर भारत	स्वामी रामानंद व वल्लभाचार्य
2.	बंगाल	चैतन्य महाप्रभु
3.	असम (आलोम)	आचार्य शंकर देव
4.	उड़िसा (ओड़िसा)	पंचसखा

नोट:- निम्नलिखित पांच विद्वानो के समूह को पंचसखा कहा जाता है —

(i) बलराम दास
(ii) अनन्त दास
(iii) यशोवन्त दास
(iv) जगन्नाथ दास
(v). अच्युतानंद दास

5 महाराष्ट्र → वारकरी सम्प्रदाय

नोट:- वारकरी सम्प्रदाय की स्थापना सर्वप्रथम संत पुण्डरिक के द्वारा की गई थी इस सम्प्रदाय के विकास में निम्नलिखित चार विद्वानो का योगदान महत्वपूर्ण माना जाता है —

(i) संत ज्ञानदेव / ज्ञानेश्वर (वारकरी सम्प्रदाय के सर्वप्रथम ज्ञात संत)
(ii) संत नामदेव (विठोबा का भक्त)
(iii) संत एकनाथ
(iv) संत तुकाराम

6. दक्षिण भारत → आलवार व नयनार भक्त / संत

(i) आलवार → आलवार मूलतः तमिल भाषा का शब्द माना जाता है जिसका शाब्दिक अर्थ होता है 'अध्यात्मज्ञान या भगवद्भक्ति में लीन महापुरुष'।

सामान्यतः दक्षिण भारत की वैष्णव भक्तों को भी आलवार कहा जाता है इनकी कुल संख्या 12 मानी जाती है।
(11 पुरुष + 01 महिला (अंदाल या आंडाल)

इन आलवार भक्तों के द्वारा तमिल भाषा में रचित पदों को रंगनाथ मुनि के द्वारा 'दिव्य प्रबन्धम' के नाम से चार खण्डों में संकलित किया गया है इन चारो खण्डो में लगभग 4000 पद प्राप्त होते हैं।

(ii) नयनार → ये दक्षिणभारत के शैव भक्त माने जाते हैं